उलटबाँसी

[कबीर की उलटबाँसियाँ]

बीए
प्रथम वर्ष
हिन्दी साहित्य
प्रथम प्रश्नपत्र

प्रस्तुतकर्ता
डॉ० जगदीश शरण
सहायक प्रोफेसर हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय धौलपुर
(मुरादाबाद)

(स्वयंनिर्मित)

Scanned with CamScanner

उलटबाँसियाँ : 'उलटबाँसी' का सामान्य अर्थ है- उलटा अर्थ। अनेक विद्वानों ने 'उलटबाँसी' की परिभाषाएँ दी हैं। किन्तु इनमें डॉ० सरनाम सिंह का स्पष्टीकरण अत्यन्त संगत जान पड़ता है। उनके अनुसार, 'मेरी समझ में इस शब्द की दो व्युत्पत्तियाँ हो सकती हैं- एक तो 'उलटबाँसी' संयुक्त शब्द से और दूसरी 'उलटवाँ' से सम्बन्धित। पहले शब्द 'उलटवाँ' का अर्थ उलटी हुई है और 'सी' का अर्थ समान है, अतएव 'उलटबाँसी' का अभिप्राय हुआ 'उलटी हुई प्रतीत होने वाली उक्ति'। उलटबाँसियों में उलटी बातें कही गयी हैं, इसीलिए यह अर्थ उचित भी प्रतीत होता है। गोरखनाथ का 'उलटी चर्चा' और कबीर का 'उलटा वेद' आदि प्रयोग भी इस अर्थ का समर्थन करते हैं।'

दूसरी व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में उनका मत है कि - 'दूसरी व्युत्पत्ति कुछ विशेष ध्यान देने योग्य है और वह है 'उलटबांस' शब्द से। 'परमपद' या आध्यात्मिक लोक में रहने वाला निवास-स्थान वास्तव में 'उलटबांस' है इससे सम्बन्धित वाणी 'उलटबाँसी' वाणी कहला सकती है। आध्यात्मिक अनुभूतियाँ लोक-विपरीत अनुभूतियाँ होती हैं और उन अनुभूतियों को व्यक्त करने वाली वाणी लोक-दृष्टि से उलटी प्रतीत होती है, वास्तव में वह उलटी होती है। इस शब्द में 'बाँ' के ऊपर जो सानुनासिकता दिखाई पड़ती है वह अकारण है।'

इस प्रकार 'उलटबाँसी' ऐसी उक्ति है जो सामान्य प्रचलित लोकधारणा के विपरीत होती है और अपने अभिधार्थ में विलक्षण और असम्भव प्रतीत होती है, किन्तु वस्तुतः वह किसी गूढ़ अर्थ की व्यंजना करती है। यह निरर्थक और बेतुकी नहीं होती।

उलटबाँसियों की रचना सिद्धों और नाथों ने भी है। सिद्धों-नाथों की हठयोगी साधना को आत्मसात करने के कारण कबीर पर उनका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। अतः कबीर की उलटबाँसियाँ सिद्धों और नाथों की उलटबाँसियों से प्रभावित हैं। प्रो० पुष्पपाल सिंह ने कबीर की उलटबाँसियों के तीन वर्ग किए हैं— अलंकार-प्रधान, अद्भुत-प्रधान और प्रतीक-प्रधान। उनके मतानुसार कबीर की अलंकार-प्रधान उलटबाँसियों में अधिकांशतः विरोधी बातें ही रहती हैं। अतः इनमें प्रयुक्त अलंकार भी विरोधमूलक हैं, जो किसी-न-किसी रूप में आश्चर्य की सृष्टि करते हैं। अद्भुत-प्रधान उलटबाँसियों में अद्भुत रस की ही विशेष प्रतिष्ठा करने के कथन में हुई है। यद्यपि अलंकार और प्रतीकों की भी स्थिति इन कथनों में स्वाभाविक रूप से रही है, किन्तु प्रमुखता अद्भुत रस की ही रहती है। प्रतीकात्मक उलटबाँसियों में कबीर ने साधना के निगूढ़ रहस्यों को प्रायः रूपक आदि के द्वारा कहा है।

कबीर की उलटबाँसियों के कुछ उदाहरण –

(1) एक अचम्भा देखा रे भाई।
बाड़ा सिंह चरावै गाई॥

(2) है कोई जगत गुर ग्यानीं, उलटि बेद बूझै।
पाणी में अगनि जरै, अंधेरे को सूझै॥

(3) गाइ नाहर खायो, हरनि खायो चीता।
कागिल गर फांदिया, बटेरै बाज जीता॥

Scanned with CamScanner